Note : If you would like to view or download the entire book please go through home page of Jain eLibrary Website – www.jainelibrary.org and register your e-mail id (or sign in if previously registered).

Vijay Vallabhsuri Smarak Granth

Folder No.	012060
Granth Name	Vijay Vallabhsuri Smarak Granth
Author	Mahavir Jain Vidyalaya
Editor – Gujarati	Dr. Bhogilal J Sandesara, Dr. Umakant P Shah, Shri Nagkumar N Makati
Editor – Hindi	Prof. Pruthviraj Jain
Editor – English	Dr. Motichandra, Dr. Jagdishchandra Jain, Shri C J Shah
Publisher	Mahavir Jain Vidyalaya
Edition	1
Year	1956
Pages	756

विजय वल्लभसूरि स्मारक ग्रन्थ

फोल्डर नं.	०१२०६०
ग्रन्थ	विजय वल्लभसूरि स्मारक ग्रन्थ
मूल	महावीर जैन विद्यालय
संपादक – गुजराती	डॉ. भोगीलाल जे. सांडेसरा, डॉ. उमाकान्त पी. शाह, श्री नागकुमार एन. मकाती
संपादक – हिन्दी	प्रो. पृथ्वीराज जैन
संपादक – अंग्रेजी	डॉ. मोतिचन्द्र, डॉ. जगदिशचन्द्र जैन, श्री सी. जे. शाह
प्रकाशक	महावीर जैन विद्यालय
आवृत्ति	१
प्रकाशन वर्ष	१९५६
पृष्ठ	७५६

मुख्य टाईटल
आमुख – मुनिश्री पुण्यविजयजी
निवेदन
अनुक्रमणिका
गुजराती विभाग

श्रद्धाजलि अने जीवन

श्रीवल्लभगुरुसडक्षिप्तचरित्रस्तुति – मुनिश्री पुण्यविजयजी ---------------------------------- १
आचार्यश्रीने अंजलि – प्रा. रमण कोठारी, एम. ए -- ३
राजलहंसने – श्रीपादराकर-- ४
हे आर्षदृष्टा – श्रीशांतिलाल बी शाह --- ५
वल्लभ – हरियाली – प्रा. हिरालाल र. कापडिया, एम. ए. --------------------------------- ६
श्रीमद विजयवल्लभसूरिजीने अंजलि – श्री मावजी दामजी शाह ---------------------------- ७
सूरीश्वरने स्मरणांजलि – श्री कल्याणचंद्र के. झवेरी -------------------------------------- ८
नमी रहुं – श्री नवीनचंद्र अंबालाल शाह -- ९
अमर वल्लभ – श्री प्रवीणचंद्र जेचंद महेता -- १०
सूरिजीनो जीवनसूर – डॉ. जयंत एम. पटणी, एम. बी., बी एस --------------------------- ११
आपणा श्रीवल्लभ गुरुदेव – आचार्यश्री विजयसमुद्रसूरि ----------------------------------- १३
तीर्थंकरोना चरणे उच्चारेल मातानुं वचन सार्थक – मुनिश्री ईंद्रविजयगणि ------------------ १६
युगवीरनां संस्मरणो – मुनिश्री जनकविजयगणि -- १९
स्वर्गस्थ आचार्य श्रीविजयवल्लभसूरीश्वरजी – दि. ब. कृष्णलाल मोहनलाल झवेरी ---------- २२
युगवीरनो अंतिम दृष्टिनिर्देश – श्री पादराकर -- २३
प्राचीन ज्ञानभंडारना उद्धारक – श्री मोहनलाल दीपचंद चोक्सी ----------------------------- २७
युगदृष्टा आचार्य श्रीवल्लभसूरीश्वरजी – श्री पी. के. शाह, एम. ए. ------------------------- ३२
साधुसंस्थाना कीर्तिकळश – आचार्यश्री विजयउमंगसूरि ------------------------------------ ९७
युगदृष्टाना हस्ताक्षर --- ९९
वल्लभवाणी -- १००

लेख – संग्रह

भारतीय कळामां जैन संपूर्ति – श्री रविशंकर म. रावळ ------------------------------------- १
जैन धर्म अने जैन संस्कृतिनी केटलीक लाक्षणिकताओ – प्रा. अमृतलाल सवचंद
गोपाणी एम. ए. पीएच. डी. --- १२
जैन अभ्यासमां नवीन दृष्टिनी आवश्यकता – प्रा. केशवलाल हिं. कामदार, एम. ए. --------- १६
भाषाना विकासनां प्राकृत – पालिभाषानो फाळो – पं. बेचरदास दोशी --------------------- २०
जैन परंपरानुं अपभ्रंश साहित्यमां प्रदान – प्रा. हरिवल्लभ चु. भायाणी, एम. ए.
पीएच. डी -- ३१
जैन साहित्यनां पदो विषे विचारणा – प्रा. चंद्रकान्त एच. महेता, एम. ए. एलएल. बी,
पीएच, डी. -- ४१
प्रथमानुयोगशास्त्र अने तेना प्रणेता स्थविर आर्यकालक – मुनिश्री पुण्यविजयजी ----------- ४९
श्वे. गुरु विमलसूरिनी प्रश्नोत्तर – रत्नमाला – पं. लालचंद भगवान गांधी ------------------- ५७
ब्रह्मविहार – जैन अने जैनेतर दृष्टिए – प्रा. जयंतीलाल भाईशंकर दवे, एम. ए. ------------ ६६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीपार्श्वनाथनी एक प्राचीन धातुप्रतिमा – डॉ. उमाकान्त प्रेमानन्द शाह, एम. ए. पीएच. डी ---------- ७०
प्रकाशानुं एक प्राचीन शिल्प – श्री शिवलालदास शंभुभाई देसाई ---------- ७३
श्री पंचासरा पार्श्वनाथना मन्दिर विषेना केटलाक – डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा, एम. ए. पीएच. डी. ---------- ७६
गुजरातनुं प्रथण ईतिहासकाव्य – प्रा. जयन्त प्रे. ठाकर, एम ए, कोविद ---------- ८४
सोलंकी राजवीओनो त्यागधर्म – श्री चुनीलाल वर्धमान शाह ---------- ९३
यक्षपूजानी ऐतिहासिकता – श्री कनैयालाल भाईशंकर दवे ---------- ९६
महाराजा जयसिंह सिद्धराजना चांदीना सिक्का – श्री अमृत पंड्या ---------- १०२
हेमचन्द्राचार्य एमनुं जीवन अने कवन – प्रा. रमणलाल सी. शाह, एम. ए. ---------- ११२
खुशफहम सिद्धिचंद्रगणिकृत नेमिनाथ – डॉ. मंजुलाल र. मजमुदार, एम. ए. एलएल. बी., पीएच. डी ---------- ११७
भावलिंगनुं प्राधान्य – डॉ. भगवानदास म. महेता, एम. बी. बी. एस ---------- १२०
तत्त्वार्थश्रद्धानम – सम्यग्दर्शनम एटले शुं – श्री संतबाल ---------- १२६
मनुष्य एकलो नथी – श्री दलसुख मालवणिया ---------- १२८
वादिदेवसूरिनुं जन्मस्थान क्युं – श्री गोकुलभाई दोलतराम भट्ट ---------- १३२
अमारि पालनना बे अप्रकट ऐतिहासिक लेखो- श्री नागकुमार मकाती, बी. ए., एलएल. बी. ---------- १३४
वडनगरनी शिल्पसमृद्धि – श्री रमणलाल नागरजी महेता ---------- १३७
ब्रह्म व्रतेषु व्रतम – श्री मनसुखलाल ताराचंद महेता ---------- १४१
धर्म अने संस्कृति – मुनिश्री कल्याणचंद्रजी ---------- १४९
श्रीमहावीर परमात्मानुं व्यापक जीवन – श्री फतेहचंद झवेरभाई शाह ---------- १५३
निर्ग्रंथ सिद्धांतनी उत्तमता – डॉ. वल्लभदास नेणसीभाई ---------- १५७
जैन जातकोना चित्रप्रसंगोवाळी कल्पसूत्रनी सुवर्णाक्षरी प्रत – श्री साराभाई मणिलाल नवाब ---------- १६१
सुपासनाहचरियंनी हस्तलिखित पोथीमांनां रंगीन चित्रो – श्री पुण्यविजयजी ---------- १७६
श्रीयशोविजयोपाध्याय अने तेमणे लखेली हाथपोथी नयचक्र – श्री पुण्यविजयजी ---------- १८१
हिन्दी विभाग
श्रद्धाजलि अने जीवन
जागृति के देवदूत श्री वल्लभ – श्रीरामकुमार जैन, बी. ए. टी. न्यायतीर्थ ---------- १
युगवीर आचार्य श्रीविजयवल्लभ जीवनज्योति – प्रा. पृथ्वीराज जैन, ए. शास्त्री ---------- २
पंजाब केसरी का पंचामृत – श्री ऋषभदासजी जैन ---------- ९
भारत की एक महान विभूति – महता श्री शिखरचन्द्र कोचर, बी. ए. एलएल. बी. आर, जे. एस. साहित्यशिरोमणि ---------- १५
लेख – संग्रह

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन पुराण – कथा का लाक्षणिक स्वरुप – श्री वीरेन्द्रकुमार जैन ---------------------------- १
पालि – भाषा के बौद्ध ग्रन्थों में जैन धर्म – डॉ. गुलाबचंद चौधरी, एम. ए. पीएच. डी ------ ६
पिप्पल गच्छ गुर्वावलि – श्री भंवरलालजी नाहटा --- १३
संस्कृति निर्माता युगादिदेव – श्री शान्तिलाल खेमचंद शाह, बी. ए. ----------------------- २३
स्याद्वाद पर कुछ आक्षेप और उनका परिहार – श्री मोहनलाल मेहता, एम. ए.
शास्त्राचार्य -- २७
जैन साधना का ईच्छायोग – कविरत्न श्रद्धेय श्री अमरचन्दजी महाराज --------------------- ३३
भगवान महावीर का अपरिग्रहवाद – श्री नरेन्द्रकुमार भानावत, साहित्यरत्न ---------------- ३५
संजय का विक्षेपवाद और स्याद्वाद – पं. महेन्द्रकुमार जैन, न्यायाचार्य --------------------- ३९
श्री आत्मारामजी तथा ईसाई मिशनरी – प्रा. पृथ्वीराज जैन, एम, ए, शास्त्री -------------- ४४
जैन दृष्टिसे साधनामार्ग – श्री ऋषभदासजी --- ५०
धर्मोत्तर के टिप्पण के कर्त्ता मल्लवादी – श्री दलसुखभाई मालवणिया ---------------------- ५३
प्राचीन भारत में देश की एकता – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल, एम. ए. पीएच. डी.
डी. लिट -- ५५
भट्टारक कनककुशल और कुँअरकुशल – श्री अगरचंदजी नाहटा --------------------------- ६५
जिनप्रतिमा और जैनाचार्य – पं. हंसराजजी शास्त्री --- ७५
तिरुवल्लुवर तथा उनका अमर ग्रंथ तिरुक्कुरल – पं. महेन्द्रकुमार जैन, न्यायशास्त्री ------- ८२
सुवर्णभूमि में कालकाचार्य – डॉ. उमाकान्त प्रेमानन्द शाह, एम. ए. पीएच. डी ------------- ९१

अंग्रेजी विभाग

श्रद्धांजलि अने जीवन

The Great Acarya – Shri Chimanlal J. Shah, M. A
A Deadicated Soul – Shri K. D. Kora, M. A.

लेख संग्रह

Structural Evolution and the Doctrine of Karma – Dr. Hari Satya Bhattcharya, M. A. B. L. ph. D ---1
The Figures of the Two Lower Reliefs on the Parsvnatha Temple at Khajuraho – Dr. Klaus Bruhn, Ph. D. ---7
The Message of the Religion of Ahimsa – Prof. A. Chakravarti M A, I.E.S (Retd)-- 36
Some Aspects of Jaina Monastic Jurisprudence – Dr. S. B. Deo, MA, Ph D.--------- 41
Materials Used for Jaina Inscriptions – Prof. D. B. Diskalkar, M. A.--------------------- 55
Jamali His Life and Point of Diference from Lord Mahavira – Prof. Prithvi Raj Jain M. A. Shastri-- 61
The Concept of Arhat – Prof. Padmanabh S. Jaini, M. A. Tripitakacarya ------------- 74
Historical Position of Jainism – Dr. J. S. Jetley, M. A. Ph. D------------------------------ 77
Jainism Its Distinctive Features and Their Impact on our Composite Culture – Prof. Kr. De. Karnataki, MA --- 82
Fundamental Principles of Jainism – Dr. B. C. Law, M. A. B.L. Ph. D. D. Litt. F. R. A. S. B. F. R. A. S. Hony--- 87
A 13th Century Inscribed Metal Bell from Patan (N. Gujrat) – Dr. M. R. Majumdar M. A. LL.B.Ph D. ---112

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

What Jainism Offers to the World – Shri C. S. Mallinath ---------------------------------115
Digambara Jaina Tirthankaras from Maheshwarand Nevasa – Dr. H. D. Sankalia M. A. Ph. D. London --119
Glory of Jainism – Shri Chimanlal J. Shah, M. A.--121
Jaya – Group of Goddesses – Dr. Umakant P. Shah, M. A. Ph. D ---------------------124
A Rare Sculpture of Mallinatha – Dr. Umakant P. Shah, M. A. Ph. D. -----------------128
Acarya Haribhatras Comparative Studies in Yoga – Dr. N. M. Tatia, M. A. D. Litt --129
Dhurtakhyana in the Nisithacurni – Dr. A. N. Upadhye, M.A, D. Litt--------------------143
The Place of Jainism in Indian Thought – Dr. Felix Valyi ---------------------------------152
A Historical Outline of the Languages of Western Indian – Prof. K. B. Vyas, M. A. F. R. A. S.--157
Jainism A Way of Life – Shri B. P. Wadia --169

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org